ओडिशा में TESS-India द्वारा 'टीचर मेंटरिंग' का प्रोत्साहन

"*अध्यापकों की क्या मेंटरिंग, मैम?*
हम पहले ही उन्हें नियमित रूप से मॉनिटर कर रहे हैं - तब अंतर क्या है?
यह करने के लिए हमें प्रशिक्षण की आवश्यकता क्यों है?
हमें पता है कि हमें क्या करना है.
हमें किसी प्रशिक्षण की बिलकुल आवश्यकता नहीं है."

२०१५ में ओडिशा राज्य के ढेंकानाल जिले में TESS-India योजना के अंतर्गत 'टीचर मेंटरिंग' के पहले प्रशिक्षण सत्र के दौरान एक 'क्लस्टर रिसोर्स सेंटर कोऑर्डिनेटर' (CRCC) ने प्रबलता के साथ मुझसे यह बात कही.

ये शब्द, जो अधिकांश प्रतिभागियों की राय व्यक्त कर रहे थे, आज भी अक्सर मेरे मन में आते हैं.

उस समय मुझे लगा था कि अपना सिर फोड़ लूँ, लेकिन सत्र के समाप्त होते-होते उनका दृष्टिकोण थोड़ा बदला था - हालांकि बस थोड़ा ही!

मुझे याद है मैं सोच रही थी कि हमें कितना ज़्यादा काम करने की आवश्यकता थी, और इस मानसिकता को बदलना कितना मुश्किल होगा.

किन्तु आज यह परिदृश्य पूरी तरह से परिवर्तित हो गया है.

ढेंकानाल जिले में ही नहीं बल्कि राज्य भर में, जो मेरा विश्वास कीजिए, कोई छोटी उपलब्धि नहीं है.

विशेष रूप से, TESS-India योजना के सक्रिय होने की कम अवधि का ध्यान रखते हुए.

जैसा कि कहावत है: 'इट इज़ नेवर टू लेट'!

सचमुच, इस साल के शुरुआत में TESS-India टीम को यह खुशखबरी मिली कि ओडिशा सरकार – 'सस्टेनेबल एक्शन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग ह्यूमन कैपिटल' (SATH) योजना के अंतर्गत अपनी "इन-स्कूल इंटरवेंशंस फॉर एलीमेंट्री स्कूल्ज़" के द्वारा - शिक्षा की 'कोर पेडगोजी' (मूल शिक्षणशास्त्र) और 'इक्विटी' (निष्पक्षता) को बढ़ावा देने के लिए TESS-India के साथ सहभागिता के साथ काम करेगी.

इसके अतिरिक्त, सर्व शिक्षा अभियान (SSA) योजना के अंतर्गत 'डिजिटल इनिशिएटिव्स' के हस्तक्षेप होंगे और ४७८२ केंद्रों में कार्यरत CRCCs के प्रशिक्षण के द्वारा अकादमिक 'मेटरिंग' और 'मॉनिटरिंग' को मज़बूत बनाया जाएगा.

तो इतना विशाल परिवर्तन कैसे आया?

वह क्या था जिसने इस परिस्थिति को इतने कम समय में इतने सकारात्मक ढंग से परिवर्तित कर दिया?

प्रख्यात शिक्षाविदों और विशेषज्ञों के अनुसार – 'स्टेट कौंसिल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग' (SCERT), 'डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग' (DIET) कर्मचारियों, ब्लॉक स्तर के पदाधिकारियों, CRCCs और अध्यापकों समेत - यह परिवर्तन TESS-India योजना की वजह से आया.

२०१२ और २०१३ के बीच सात भारतीय राज्यों में शुभारंभ के साथ, TESS-India ओपन यूनिवर्सिटी UK के निर्देशन में भारत में शिक्षक प्रशिक्षण को मज़बूत बनाने के लिए एक सहभागिक अकादमिक उद्यम है, जो कि भारत सरकार के साथ काम कर रहा है और UK सरकार से मिले UK aid के द्वारा वित्त पोषित है.

यह योजना एक अभिनव अकादमिक उद्यम है, जिसका उद्देश्य कक्षा में 'इंक्लूसिव' (सबको सम्मिलित करने वाले), 'पार्टिसिपेटरी' (भागीदारी वाले) और 'चाइल्ड-सेंटर्ड' (बच्चों पर केंद्रित) शिक्षण और अध्ययन को यथार्थ बनाने की चुनौतियों का सामना करने में भारत सरकार की सहायता करना है.

अध्यापकों के 'कंटीन्यूअस प्रोफेशनल डेवलपमेंट' (CPD) के लिए 'ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज' (OERs), 'ऑनलाइन लर्निंग' और 'सोशल मीडिया टूल्स' का प्रयोग करने के अपने अभिनव दृष्टिकोण के द्वारा यह एक 'पैराडाइम शिफ्ट' (प्रतिमान विस्थापन) प्रस्तुत करता है.

इस प्रकार, यह भारत के राष्ट्रीय निति निर्देशों और लक्ष्यों के साथ सुसंगत है, और व्यवस्था भर में कई ढांचों और स्तरों पर बड़े पैमाने में काम करने के लिए पर्याप्त रूप से लचीला है.

खुर्दा जिले में एक वरिष्ठ DIET 'फैकल्टी मेंबर' ने इस योजना के लाभ खूबसूरती से व्यक्त किए, जब उन्होंने उत्साहपूर्वक बताया कि:

"*बेशक हम अपने विद्यालयों में शिक्षण-अध्ययन की गुणवत्ता को सुधारने के लिए TESS-India के आने के पहले भी कई चीज़ें कर रहे थे.*

लेकिन कक्षाओं में वास्तविक परिवर्तन की शुरुआत विचारशीलता को प्रेरित करने वाली उन सामग्रियों से हुई.

यह योजना एक ईश्वरीय देन थी, क्योंकि इसके द्वारा हमें १२५ निःशुल्क OERs और ५५ ऑडियो-वीडियो प्राप्त हुए.

ये OERs संक्षिप्त, सरल और सुलभ थे, और इन्होंने टीमवर्क, चिंतन, विचार-विमर्श, और कक्षा में शिक्षण-अध्ययन को और अधिक 'स्टूडेंट-सेंटर्ड', 'पार्टिसिपेटरी' और 'इंक्लूसिव' बनाने के अनुभव साझा करने के लाभ समझने में हमारी सहायता की.

TESS-India के आने से पहले यह केवल शब्द भर थे."

जैसा कि एक दूसरे सदस्य ने समझाया, TESS-India द्वारा संचालित 'ओरिएन्टेशन्स' (उन्मुखीकरण) और प्रशिक्षण सचमुच प्रभावी थे:

"*हमने महसूस किया कि अध्यापकों का 'सुपरविज़न' और 'मॉनिटरिंग' पर्याप्त नहीं थे.*

उन्हें विद्यालय-आधारित सहायता की आवश्यकता थी, जो एक मित्रतापूर्ण, गैर-भयसूचक और गैर-आलोचनात्मक शैली में प्रस्तुत की जाए.

जिसकी आवश्यकता थी, वह थी सच्चे अर्थ में 'मेंटरिंग'.

यदि हम बच्चों को भाग लेते और सीखते देखना चाहते थे, तो यह एक अपरक्राम्य कार्यनीति थी.

अगला प्रश्न था कि अध्यापकों को कौन 'मेंटर' करेगा?

ज़ाहिर है कि सबसे अच्छा व्यक्ति वही है जो अध्यापकों से सबसे घनिष्ठ हो – CRCC.

और इस प्रकार काम शुरू हुआ और धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगे."

फरवरी २०१७ में किए गए 'इवैल्यूएशन' (मूल्यांकन) में 'डाटा एविडेंस' (आधार सामग्री) दर्शाती है कि विभिन्न कार्यनीतियों का प्रयोग करते हुए, वह इस योजना का बहु-आयामी दृष्टिकोण था, जिसके कारण यह सफल हुई.

मोबाइल फ़ोन और टेबलेट्स से SD कार्ड के माध्यम से OERs (वीडियो सहित) एक्सेस करने से विचारों पर परामर्श करना, और उन्हें कक्षा में अपनाना, आसान बन गया.

TESS-India के MOOC "एन्हान्सिंग टीचर एजुकेशन थ्रू OERs" का लॉन्च शिक्षण समुदाय में बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचा - १०,००० संस्करण अंग्रेजी में और ३३,००० हिंदी में एक्सेस किए गए - उन लोगों के पास भी, जो दूरस्थ ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में थे.

MOOC में भाग लेना सीधे शिक्षकों के बीच आत्मविश्वास और 'डिजिटल स्किल्स' के विकास में परिणत हुआ - उदहारण के लिए, 'प्रैक्टिसेज' और 'पीयर लर्निंग' के उदहारण साझा करने के लिए WhatsApp जैसे सोशल मीडिया का प्रयोग.

इस सबके लिए एक सबल 'स्टेट रिसोर्स ग्रुप' के द्वारा सहायता दी गई थी, जबकि 'इंटरैक्टिव' (परस्पर संवादात्मक) 'हैंड्स-ऑन' प्रशिक्षण और फॉलो-उप का परिणाम अध्यापकों का एक अधिक 'पार्टिसिपेटरी', 'स्टूडेंट-सेंटर्ड' शिक्षण और अध्ययन के दृष्टिकोण की ओर जाना था.

आज ओडिशा में 'टीचर मेंटरिंग' ने इस आंदोलन के दूसरे राज्यों में फैलने, और इस प्रकार छात्रों के अध्ययन को बेहतर बनाने के लिए भारत सरकार की अध्यापकों के लिए CPD के अजेंडे को आगे बढ़ाने की उत्साहित करने वाली संभावना प्रस्तुत की है.

डॉ संध्या परांजपे, शिक्षा में रिटायर्ड प्रोफेसर, (NCERT), नई दिल्ली, भारत
बाल रक्षा भारत SAVE के साथ हेड अकादमिक, TESS-India और
सीनियर एजुकेशन कंसलटेंट, UNICEF महाराष्ट्र, भारत